''इतिहास विषय में भारतीय ज्ञान परम्परा''

राष्ट्रीय कार्यशाला

29-30 जून, 2024

आयोजक

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व अध्ययनशाला

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

इतिहास विषय में भारतीय ज्ञान परंपरा

भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती रही है। वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया था। ''कर्म वही है जो बंधनों से मुक्त करे और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए'' शिक्षा के इस संकल्प को भारतीय परंपरा में अंगीकृत कर तद्नुरूप ही घर, मंदिर, पाठशाला, गुरूकुल तथा विश्वविद्यालयों में संस्कारयुक्त स्वदेशी शिक्षा दी जाती थी। प्राचीनकाल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान, परंपराएं और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती रही हैं। पुराण में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है। भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, बल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केन्द्र थे तथा यहां कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्देश्य भी भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित विषयों का गहन विमर्श करना तथा शोध संगोष्ठी के माध्यम से परंपरागत ज्ञान एवं आदर्शों को समाज में पुर्नस्थापित करने का सफल प्रयास करना है।

इतिहास विषय में भारतीय पारंपरिक ज्ञान में विचारों, दर्शन और ऐतिहासिक आख्यानों की एक समृद्ध परम्परा रही है जो पीढ़ियों से चली आ रही है। प्राचीन भारतीय ग्रंथ वेद, उपनिषद, पुराण, महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में भारतीय इतिहास गहराई से निहित है। ये ग्रंथ न केवल ऐतिहासिक विवरण प्रदान करते हैं बल्कि प्राचीन भारतीय समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने की गहराई को भी रेखांकित करते हैं। जिसमें मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि रखा गया है।

भारतीय उपमहाद्वीप में प्रारंभिक शहरीकरण और सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं को समझने के लिए सिंधु-सरस्वती सभ्यता का अध्ययन महत्वपूर्ण है। सिंधु-सरस्वती सभ्यता की नगरीय, व्यापार और सांस्कृतिक प्रथाओं के बारे में जानकारी प्रदान करती है। वैदिक काल, जो वेदों की रचना की विशेषता है, प्रारंभिक सभ्यता और प्रारंभिक हिंदू धर्म के उद्भव का प्रतीक है। यह खानाबदोश जीवन शैली से स्थायी कृषि और प्रारंभिक राज्य गठन के विकास का प्रतीक है, इसी श्रंखला में बौद्ध एवं जैन साहित्यों में भी भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रचुर संगृह प्राप्त होता है। चंद्रगुप्त मौर्य और अशोक जैसे शासकों के अधीन मौर्य साम्राज्य में महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक - सांस्कृतिक विकास हुआ, जिसमें बौद्ध धर्म का प्रसार भी शामिल है।

गुप्त साम्राज्य विज्ञान, गणित, साहित्य और कला में अपनी प्रगति के लिए जाना जाता है। भारतीय इतिहास में मध्यकाल में इस्लामी शासन के बावजूद भक्ति आंदोलन के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा की निरन्तरता बनी रही।

औपनिवेशिक काल, विशेष रूप से ब्रिटिश शासन के तहत, महत्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों के माध्यम से भारतीय विचारकों, विद्वानों एवं स्वतंत्रता सेनानियों के राजनैतिक मूल्यों में भी भारतीय परम्परा के तत्व समाहित रहे हैं,जिससे कि भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल्यों की निरन्तरता बनी रही।

भारत का विशाल भूगोल इसके विविध क्षेत्रीय इतिहास में भी योगदान देता है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक-राजनीतिक विशेषताएं हैं। क्षेत्रीय इतिहास का अध्ययन भारतीय समाज की बहुलता के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इतिहास में भारतीय पारंपरिक ज्ञान में सांस्कृतिक प्रथाएं, कला रूप, संगीत, नृत्य, साहित्य, वास्तुकला इत्यादि शामिल हैं, जो सदियों से विकसित होते रहे हैं और भारत की पहचान को विश्व पटल पर अद्वितीय बनाए हुये हैं। कुल मिलाकर, इतिहास विषय में भारतीय पारंपरिक ज्ञान भारत के अतीत की बहुआयामी समझ प्रदान करता है, जो इसकी सांस्कृतिक समृद्धि, विविधता और सहस्राब्दियों से निरंतरता को दर्शाता है।

इतिहास विषय में भारतीय ज्ञान परम्परा का ज्ञान वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों को मिल सके, इसके लिए यह जरूरी है कि विश्वविद्यालयीन स्तर पर तैयार होने वाले पाठ्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परम्परा के आधारभूत स्तंभों का सूक्ष्मता से समावेश किया जाए।

भारतीय ज्ञान परम्परा को नई शिक्षण तकनीक व साधनों के माध्यम से शिक्षण पद्धति को रुचिकर बनाना। इसके लिए विशेष रूप से विद्यार्थियों को केस स्टडी, e-learning, ICT, सेमीनार, कार्यशालाएं, शोध परियोजनाएं एवं शैक्षणिक भ्रमण इत्यादि के साथ उन्हें ऐसे क्रियाकलाप प्रदान करना जो उन्हें समाज से जोड़ सकें जिसके फलस्वरूप समाज में भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति जागरूकता हो सके। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भारतीय ज्ञान परम्परा को इस आधार पर पढ़ाने की सिफारिश की गई है कि नई पीढ़ी आधुनिकता की दौड़ में भारतीय पारंपरिक ज्ञान को भूलती जा रही है। ऐसे में इसे अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिए। जिससे कि नई पीढ़ी भारतीय ज्ञान से जुड़ी रहे और इस पर गर्व महसूस कर सके।

कार्यशाला में विमर्श हेतु प्रस्तावित बिन्दुः

- भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता
- भारतीय ज्ञान परम्परा और इतिहास
- भारतीय ज्ञान परम्परा में साहित्य
- भारतीय ज्ञान परम्परा में लोक साहित्य
- उपनिषद और भारतीय ज्ञान परम्परा
- भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास और वर्तमान
- भारतीय ज्ञान परंपरा के आधारभूत तत्व
- प्राचीन भारतीय कला एवं स्थापत्य
- भारतीय ज्ञान परम्परा में इतिहास लेखन
- भारतीय इतिहास में गुरु-शिष्य परम्परा
- भारतीय ज्ञान परम्परा एवं वैदिक संस्कृति
- वैश्विक संस्कृति पर भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रभाव
- प्राचीन भारतीय शैक्षणिक पद्धति
- भारतीय ज्ञान परम्परा में वैज्ञानिक दृष्टि
- भारतीय ज्ञान परम्परा की वर्तमान समय में उपादेयता
- प्राचीन भारतीयविज्ञान एवं तकनीक
- भारतीय ज्ञान परंपरा और लोक कला
- भारतीय ज्ञान परम्परा एवं लोक संस्कृति
- भारतीय ज्ञान परम्परा में वास्तुकला एवं अध्यात्म
- भारतीय ज्ञान परम्परा में धर्म एवं दर्शन

विश्वविद्यालय का परिचय

ऐतिहासिक नगर ग्वालियर में स्थित जीवाजी विश्वविद्यालय एक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान है। यह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्यता प्राप्त एवं NAAC से A^{++} ग्रेड प्राप्त विश्वविद्यालय है जो 23 मई 1964 को अस्तित्व में आया। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति स्वर्गीय डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने 11 दिसंबर 1964 को नौलखा परेड मैदान के विशाल परिसर में इसकी आधारशिला रखी थी। विश्वविद्यालय का आदर्श वाक्य "विद्याया प्राप्तते तेजः" इसके लोगो में अंतर्निहित है। विश्वविद्यालय का अधिकार क्षेत्र ग्वालियर, भिंड, मुरैना, श्योपुर, कलाँ, दतिया, शिवपुरी, गुना, और अशोक नगर जिलों में फैला हुआ है। आरंभिक दौर में विश्वविद्यालय से 25 संबद्ध महाविद्यालय थे लेकिन आज वर्तमान में 400 से अधिक सरकारी, अनुदान प्राप्त और निजी महाविद्यालय इसके अधिकार क्षेत्र में हैं।

ग्वालियर का परिचय

ग्वालियर एक ऐतिहासिक शहर है, यहाँ कई विश्व प्रसिद्ध धरोहर व स्मारक हैं जैसे ग्वालियर किला, चतुर्भुज मंदिर, तेली मंदिर, बटेश्वर, नरेसरा, सुहानिया (कच्छपघात की राजधानी), पढावली, मितावली (योगिनी मंदिर), सुरवाया (सरस्वती पट्टन), शिवपुरी, दतिया, भिंड, बेहट (तानसेन का जन्म स्थान), गौस मकबरा आदि और इन स्थलों तक पहुंचने तथा संपर्क स्थापित करने के समुचित साधन भी उपलब्ध हैं। ग्वालियर की ऐतिहासिक समृद्धि के कारण ही यूनेस्को के द्वारा ग्वालियर दुर्ग को विश्व धरोहर सूची में पंजीबद्ध किया गया है। इसके साथ ही ग्वालियर को **"City of Music"** घोषित किया गया है। ग्वालियर के आस-पास चम्बल घाटी में प्रागैतिहासिक शैल चित्र प्राप्त होने के कारण इस क्षेत्र को **"Rock Art"** की मान्यता दी गई है। आयोजक आपकी यात्रा और ग्वालियर में ठहरने की व्यवस्थता की सुनिश्चितता में प्रयासरत हैं। हमें विश्वास है कि आपकी भागीदारी कार्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने में विशेष योगदान देगी।

विभाग का परिचय

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व अध्ययनशाला की स्थापना 1969 में प्रो. आर.एन. तिगनाथ के नेतृत्व में की गई थी। उसके बाद प्रो. के.पी. नोटियाल, प्रो. बी.बी. लाल, प्रो. आर.एन. मिश्र लंबे समय तक विभागाध्यक्ष रहे और उन्होंने विभाग को विभिन्न क्षेत्रों में ऊँचाईयों तक पंहुचाया। विभाग द्वारा गुप्तेश्वर, जडेरुआ, और सूरों में पुरातात्विक उत्खनन कार्य किया गया, विभाग के नवीनतम उत्खनन कार्य में ग्वालियर के निकट कोसण(अटेर, जिला, भिंड) है। वर्तमान में यह विभाग एम.ए.- पुरातत्व, इतिहास और पी.जी. डिप्लोमा इन म्यूजियोलॉजी जैसे विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित किये जा रह हैं। इस विभाग के कई विद्यार्थी भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुरातत्व विभागों और महाविद्यालयों भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, राष्ट्रीय संग्रहालयों, व अन्य सरकारी विभागों और निजी क्षेत्र में उच्च पदों पर कार्यरत हैं।

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक
प्रो. अविनाश तिवारी, कुलगुरु

संरक्षक
प्रो. डी.एन. गोस्वामी, कुलाधिसचिव
डॉ. अरुण चौहान, कुलसचिव

संयोजक
प्रो. हेमन्त शर्मा, संकायाध्यक्ष, कला संकाय

आयोजन सचिव
प्रो. शान्तिदेव सिसोदिया
संकायाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान संकाय
विभागाध्यक्ष, प्रा.भा.इ.सं. एवं पुरातत्व अध्ययनशाला

सदस्य

प्रो. मुकुल तेलंग
प्रो. राधा तोमर
प्रो. एस. एन. महापात्रा
प्रो. विवेक बापट
प्रो. कुमार रत्नम
प्रो. एस. के. गुप्ता
प्रो. एम. के. गुप्ता
प्रो. राजेन्द्र खटीक
डॉ. राजेन्द्र कुमार वैद्य
श्री धीरेन्द्र भदौरिया
प्रो. गणेश दुबे
प्रो. मीना श्रीवास्तव
डॉ. सपन पटेल

शोध पत्र हेतु दिशा निर्देश :

कार्यशाला के विषय एवं उपविषयों पर हिन्दी और अंग्रेजी में मौलिक शोध पत्र आमंत्रित हैं। शोध आलेख 2500 शब्दों से 4000 शब्द का होना आवश्यक है। शोध आलेख में शोध मानकों का पालन अनिवार्य रूप से करें।

शोध आलेख ई मेल jusisodia@gmail.com पर दिनाँक 25 जून, 2024 तक भेजना सुनिश्चित करें।

ऑनलाईन आवेदन की अंतिम तिथिः 25 जून 2024

Google form link & QR Code
https://forms.gle/y48ERsFSmreTmHQ6A

कार्यशाला हेतु सम्पर्क

डॉ. शान्तिदेव सिसोदिया
9425742232

राहुल कुमार
8383047320